ओम् शान्ति 25-05-26 मधुबन

विशेष 1 जून से 15 जून 2026 तक की साधना के लिए प्वाइंट्स

प्राणप्यारे अव्यक्त मूर्त मात पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा अपनी शक्तिशाली मन्सा द्वारा पूरे ग्लोब को सकाश देने वाले, बाबा के तीव्र पुरुषार्थी नूरे रत्न निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सभी ने त्रिमासिक योग तपस्या का कार्यक्रम अपने-अपने स्थानों पर जरूर शुरू किया होगा। मई मास के पुरुषार्थ का होमवर्क, विशेष साइलेन्स की शक्ति और उसका प्रयोग... तथा वृत्ति द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन करने की सेवा... ऐसे गहन तीव्र पुरुषार्थ की प्वाइंट्स आपको भेजी गई थी। सभी ने लक्ष्य रख इसी अनुसार पुरुषार्थ किया होगा। जैसाकि सभी का संकल्प है कि प्रत्येक सोमवार को हम सब ''साइलेन्स डे'' के रूप में मनायें। उस दिन अन्य सेवाओं को एवाइड करते हुए मन मुख और मोबाइल का मौन रख, एकान्तवास करें। अपनी मन्सा शक्तियों द्वारा विश्व की दु:खी अशान्त आत्माओं को शान्ति की सकाश दें। प्रतिदिन प्रात: 4 से 8 बजे और सायं 6 से 10 बजे तक विशेष 8 घण्टा अपनी स्व-उन्नति के लिए समय दें। तो उसी अनुसार सभी भाई बहिनों ने जरूर ऐसी साधना शुरू की होगी।

आज आपके पास 1 जून से 15 जून 2026 तक के लिए विशेष प्वाइंट्स भेज रहे हैं क्योंकि वर्तमान समय प्रमाण वाणी की सेवा के साथ-साथ मन्सा शुभ भावनाओं की वृत्ति द्वारा सकाश देने की सेवा बहुत-बहुत आवश्यक है। जैसे बाप अव्यक्त वतन, एक स्थान पर बैठे चारों ओर विश्व के सभी बच्चों की पालना कर रहे हैं, ऐसे हम बच्चों को भी अब बाप समान बेहद की सेवा करनी है। बेहद में सकाश देनी है। इसी लक्ष्य से आपके पास यह प्वाइंट्स भेज रहे हैं, जरूर सभी अटेन्शन देना जी। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद.... ओम् शान्ति।

विशेष 1 जून से 15 जून तक की साधना के लिए पुरुषार्थ
अपनी शक्तिशाली मन्सा द्वारा सकाश देने की सेवा करो

1. वर्तमान समय चारों ओर दु:ख, अशान्ति, मन की परेशानियां बहुत तीव्रगति से बढ़ रही हैं। तो जितना तीव्रगति से दु:ख की लहर बढ़ रही है उतना ही आप सुख दाता के बच्चे अपने मन्सा शक्ति से, मन्सा सेवा व सकाश की सेवा से, वृत्ति से चारों ओर सुख की अंचली का अनुभव कराओ। हे देव आत्मायें, पूज्य आत्मायें भटकती हुई दु:खी अशान्त आत्माओं को सकाश दो।
2. जैसे ऊंची टावर से सकाश देते हैं, लाइट माइट फैलाते हैं। ऐसे आप बच्चे भी अपनी ऊंची स्थिति अथवा ऊंचे स्थान पर बैठ कम से कम 4 घण्टे विश्व को लाइट और माइट दो। जैसे सूर्य भी विश्व में रोशनी तब दे सकता है जब ऊंचा है। तो साकार सृष्टि को सकाश देने के लिए ऊंचे स्थान निवासी बनो।
3. इस देह की दुनिया में कुछ भी होता रहे, लेकिन फरिश्ता ऊपर से साक्षी हो सब पार्ट देखता रहे और सकाश देता रहे क्योंकि सर्व के कल्याण के निमित्त हो। तो साक्षी हो देखते सकाश अर्थात् सहयोग दो। यह सकाश देना ही निभाना है। निभाना अर्थात् कल्याण की सकाश देना, लेकिन ऊंची स्टेज पर स्थित होकर देना - इसका विशेष अटेंशन हो।
4. अभी समय प्रमाण वाणी की सेवा के साथ-साथ मन्सा शुभ भावनाओं की वृत्ति द्वारा सकाश देने की सेवा करो। जैसे बाप अव्यक्त वतन, एक स्थान पर बैठे चारों ओर के विश्व के बच्चों की पालना कर रहे हैं, ऐसे आप भी एक स्थान पर बैठ बाप समान बेहद की सेवा करो। बेहद में सकाश दो।

5. यह सकाश देने की सेवा निरन्तर कर सकते हो, इसमें तबियत की बात, समय की बात नहीं है। दिन रात इस बेहद की सेवा में लग सकते हो। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा रात को भी आंख खुली और बेहद की सकाश देने की सेवा होती रही, ऐसे फालो फादर करो। जब आप बच्चे बेहद को सकाश देंगे तो नजदीक वाले ऑटोमेटिक सकाश लेते रहेंगे। इस बेहद की सकाश देने से वायुमण्डल ऑटोमेटिक बनेगा।

6. आप ब्राह्मण बच्चे तना हो। तने से ही सारे वृक्ष को सकाश पहुंचती है। तो अब विश्व को सकाश देने वाले बनो। अगर 20 सेन्टर, 30 सेन्टर या दो अढ़ाई सौ सेन्टर या ज़ोन, यह बुद्धि में रहेगा तो बेहद में सकाश नहीं दे सकेंगे, इसलिए हदों से निकल अब बेहद की सेवा का पार्ट आरम्भ करो। बेहद में जाने से हद की बातें आपेही छूट जायेंगी। बेहद की सकाश से परिवर्तन होना - यह फास्ट सेवा का रिजल्ट है।

7. अब अपने दिल की शुभ भावनायें अन्य आत्माओं को पहुंचाओ। साइलेन्स की शक्ति को प्रत्यक्ष करो। हर एक ब्राह्मण बच्चे में यह साइलेन्स की शक्ति है। तो इतने ब्राह्मणों की सकाश क्या नहीं कर सकती? सिर्फ इस शक्ति को मन से, तन से इमर्ज करो। एक सेकण्ड में मन के संकल्पों को एकाग्र कर लो तो वायुमण्डल में साइलेन्स की शक्ति के प्रकम्पन्न स्वत: फैलते रहेंगे।

8. अभी आप बच्चे अपने श्रेष्ठ शक्तिशाली संकल्प द्वारा सकाश दो। कमजोरों को बल दो। अपने पुरुषार्थ का समय दूसरों को सहयोग देने में लगाओ। दूसरों को सहयोग देना अर्थात् अपना जमा करना। अभी ऐसी लहर फैलाओ – सैलवेशन लेना नहीं है, सैलवेशन देना है। देने में लेना समाया हुआ है।

9. जितना-जितना समय समीप आता जा रहा है, उतना व्यर्थ संकल्प भी बढ़ रहे हैं! लेकिन यह चुक्तू होने के लिए बाहर निकल रहे हैं। उन्हों का काम है आना और आपका काम है उड़ती कला द्वारा, सकाश द्वारा परिवर्तन करना। घबराओ नहीं। उसके सेक में नहीं आओ।

10. अब स्व कल्याण का ऐसा श्रेष्ठ प्लैन बनाओ जो विश्व सेवा में सकाश आपेही मिलती रहे। अभी उमंग-उत्साह से अपने मन में यह पक्का वायदा करो कि हम बाप समान बनकर ही दिखायेंगे। ब्रह्मा बाप का भी बच्चों से अति स्नेह है इसलिए एक-एक बच्चे को इमर्ज कर विशेष समान बनने की सकाश देते रहते हैं।

11. अब समय प्रमाण बेहद के वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। बिना बेहद के वैराग्य वृत्ति के सकाश की सेवा हो नहीं सकती। जैसे साकार को देखा कि सर्व प्राप्ति का साधन होते हुए, सर्व बच्चों की जिम्मेवारी होते हुए, सरकमस्टांश, समस्यायें आते हुए पास हो गये! पास विद ऑनर का सर्टीफिकेट ले लिया। अन्दर से बेहद की वैराग्य वृत्ति इमर्ज रही। ऐसे फालो फादर करो।

12. **अभी सेवा में सकाश दे, बुद्धियों को परिवर्तन करने की सेवा एड करो।** फिर देखो सफलता आपके सामने स्वयं झुकेगी। सेवा में जो विघ्न आते हैं, उस विघ्नों के पर्दे के अन्दर कल्याण का दृश्य छिपा हुआ है। सिर्फ मन्सा-वाचा की शक्ति से विघ्न का पर्दा हटा दो तो अन्दर कल्याण का दृश्य दिखाई दे।

13. ज्ञान मनन के साथ शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प, सकाश देने का अभ्यास, यह मन के मौन का, ट्रैफिक कन्ट्रोल का टाइम मुकरर करो। विशेष एकान्तवासी और खजानों के एकानामी का प्रोग्राम बनाओ। एकनामी और एकानामी वाले बनो।

14. हरेक यही संकल्प लो कि हमें शान्ति की, शक्ति की किरणें विश्व में फैलानी हैं, तपस्वी मूर्त बनकर रहना है, अब एक दूसरे को वाणी से सावधान करने का समय नहीं है, अब मन्सा शुभ भावना से एक दूसरे के सहयोगी बनकर आगे बढ़ो और बढ़ाओ।

15. जैसे स्थूल अग्नि वा प्रकाश अथवा गर्मी दूर से ही दिखाई देती वा अनुभव होती है। वैसे आपकी तपस्या और त्याग की झलक दूर से ही आकर्षण करे। हर कर्म में त्याग और तपस्या प्रत्यक्ष दिखाई दे तब ही सेवा में सफलता पा सकेंगे।